E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में दाम्पत्य सम्बन्ध एवं संचार माध्यम

अभयवीर
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
कमला स्नात्तकोतर
महाविद्यालय,
धौलपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय समाज में स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में हो रहे बदलाव एवं पुरातन सम्बन्धों का उल्लेख करके भारतीय संस्कृति के मूल्यों को कायम रखकर संचार क्रान्ति से अवगत कराना कि आधुनिक परिवेश में शिक्षा के बढ़ते स्तर एवं तकनीकी, चिकित्सा, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भागीदारी से एक नये समाज का रुप उभरकर सामने आ रहा है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों ने ऐसे सम्बन्धों का उल्लेख करने वाली कहानियों की रचना करके संचार साधनों ने एक संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान आदि के कारण दाम्पत्य जीवन की रुपरेखा का चित्रण किया है। भाषा संस्कृति की अहम् भूमिका इन दाम्पत्य सम्बन्धों में हो रहें बदलावों को संचार माध्यम प्रचार एवं प्रसार का कार्य कर रहे हैं। आधुनिक युग की स्वतंत्र नारी के बदलते कार्य क्षेत्रों का विवरण आज संचार क्रान्ति को कहना ही सटीक जान पड़ता है जिससे पति–पत्नी के रिश्तो पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द : दाम्पत्य, संचार, स्त्री शिक्षा होते बदलाव, पाश्चात्य सभ्यता और भारतीय समाज, भारतीय दाम्पत्य सम्बन्ध, संचार माध्यम, संचार प्रौद्योगिकी, स्त्री शिक्षा, नारी का आर्थिक स्तर, पुरुष वर्चस्व।

प्रस्तावना :

संचार अंग्रेजी भाषी कम्यूनीकेशन शब्द का हिन्दी पर्याय है जो मूलतः लैटिन भाषा के शब्द कम्यूनिस (कॉमन) से बना है। जिसका अर्थ– विचार, सूचना, संदेश का संचरण या संप्रेषण है। इसके समकक्षी हिन्दी शब्द संवाद और संप्रेषण है।

संचार परिभाषा

विल्वर श्राम

जब हम संप्रेषित करते है। तब हम अपनी सूचना विचार और अभिवृति की भागीदारी का प्रयास करते है।

चार्ल्स र्ड आस बुड

सामान्य अर्थ में जब कभी हम एक पद्धति से किसी स्त्रोत को दूसरे से प्रभावित करते है तो उनको जोडने वाले माध्यम द्वारा ही संकेतो के विकल्पों के कौशल से ही संचरण हमारा लक्ष्य होता है।

लूमिक बंगल

संचार एक प्रकिया है जिसमें सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सूचना निर्णय और संदेश दिए जाते है और यह मार्ग है जिसमें ज्ञान, विचारों और दृष्टिकोणों को निर्मित अथवा परिवर्तित किया जाता है।

इन परिभाषाओं के आधार पर संचार के बारे में कहा जा सकता है –

1. अर्थ संचार है।
2. सामाजिक मान्यताओं का संचरण होता है।?
3. अनुभव बांटना है।

संचार की प्रकिया निम्न प्रकार सम्पन्न होती

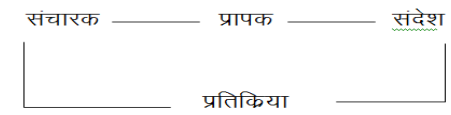

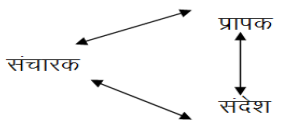

जनसंचार माध्यम

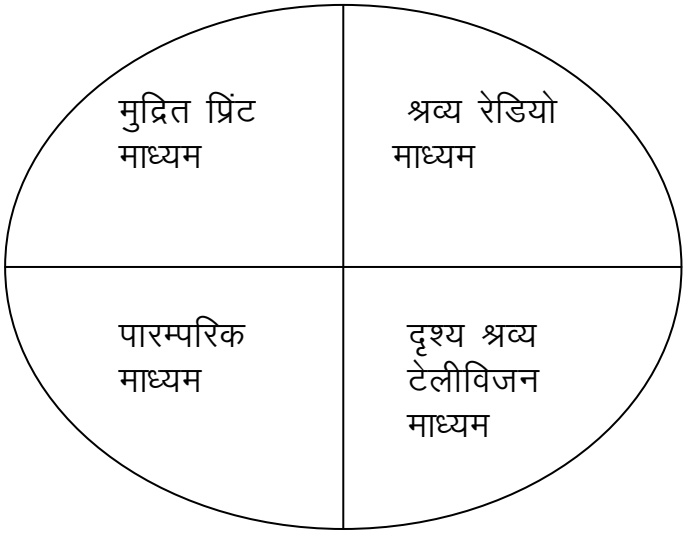

मानव जाति का अस्तित्व भाषा के बिना कल्पना करना भी निरर्थक सिद्ध होगा। सम्पूर्ण विश्व आज भाषा केवल पर ही एक दूसरे से जुड़कर अपने किया कलापो में संलग्न है। ठीक वैसे ही विश्व का एक दूसरा सबसे बड़ा समुदाय चीन के बाद भारत का आता है जिसकी मातृभाषा का परचम फहराने वाली भाषा 'हिन्दी' ही है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं। भाषा एवं संस्कृति के संचार के कारण ही स्वतंत्रता के बाद दाम्पत्य सम्बन्धों में परिवर्तन का रुप देखने को मिलने लगा है। संचार क्रान्ति में अपने प्रयोजन परक रुप को बनाते हुए एक संस्कृति सभ्यता रहन–सहन खान–पान आदि में परिवर्तन करके भौतिकतावादी समाज का निर्माण करने में अपना अहम् स्थान बनाया है। स्वातन्त्र्योत्तर कहानीकारो एवं पत्रकारों ने इस हुए परिवर्तन को बखूबी वर्णन किया है और एक नये समाज के निमार्ण की कल्पना को पूर्ण किया है। भारतीय समाज में वर्तमान में पति–पत्नी के जीवनयापन पर संचार क्रान्ति के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता सूर्य वाला, मनू भण्डारी, मृदुला गर्ग, महादेवी वर्मा जैसी विदुषी कहानीकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में संचार क्रान्ति के कारण हुए परिवर्तनों एवं पति–पत्नी के सम्बन्धों में आये बदलाव का उल्लेख किया है।

भौगोलीकरण के इस दौर में हिन्दी भाषा विश्वग्राम की भाषा बनने के कगार पर है, लेकिन अपनी संस्कृति का निर्माण करने वाले ही संस्कृति के मूलभूत तत्व 'भाषा' का विदोहन करने पर तुले हुए हैं ऐसी स्थिति में 'संचार' माध्यम एक ओर तो 'हिन्दी–भाषा' के प्रचार–प्रसार में लगे हैं तो दूसरी ओर विदेशी भाषा का प्रचार–प्रसार करते हम सभी भारत वासियों को मीठा जहर परोसा जा रहा है जिससे हम यह भूल चुके हैं कि कौन सी खाद्य सामग्री स्वास्थ्य वर्धक है और कौन सी हानिकारक परिणामतः इस प्रकार की विदेशी मीठी खाद्य सामग्री को खाने के हम आदी हो गये है ऐसी खाद्य सामग्री को पचाने की शक्ति भी लगता हैं हम सभी की बढ़ती जा रही है, यह 'विदेशी–भाषा' रुपी मीठे जहर ने भारतीय लोगों की रग–रग में अपना स्थान कायम कर लिया है। इसके तीवृ रुप से वृद्धि करने में संचार माध्यम समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, इन्टरनेट, ई–मेल, गूगल, वाट्सअप, फिल्मों ने अपनी अह्म भूमिका निभाई है। इस संचार क्रान्ति के कारण पति–पत्नी के रिश्तो में भी बड़ी तीव्रगति से परिवर्तन हुए है। पति–पत्नी आज के संदर्भ में एक दूसरे का तुलनात्मक अध्ययन करके नजर आते है। जिन्हें देखकर लगता है संचार क्रान्ति ने हमारी भाषा संस्कृति के पवित्र रुप को तहस–नहस करके रख दिया है। एक ओर तो संचार में क्रान्ति ने समाज को बिगाड़ा है तो दूसरी ओर इस क्रान्ति के वें हमें बनाया भी है। हम जिन जीवन के मूल परिवर्तनो से वंचित थे उन वंचित कार्यो को करने के लिए संचार साधनों में एक बड़ा परिवर्तन कर दिया है अतः यह दिखाई देने लगा है कि संचार के बिना आज दाम्पत्य सम्बन्धों को चलाना असम्भव सा प्रतीत होता हैं।

संचार माध्यमों ने आज के परिवेश में बड़ी तीव्र गति से परिवर्तन किया है। दाम्पत्य सम्बन्धों को बॉधने और तोड़ने में संचार साधनों की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता जैसे पहले दाम्पत्य सम्बन्ध एक निश्चित दूरी एवं निश्चित विकल्प के साथ सम्पन्न होते थे लेकिन आज इसका क्षेत्र एवं दाम्पत्य विकल्प–स्त्री पुरुष के चुनाव का क्षेत्र सम्पूर्ण भूमण्डल हो गया है। यह सब संचार एवं परिवहन के साधनों से ही सम्पन्न हो पाया है।

संचार प्रौद्योगिकी से हम आज पाश्चात्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों को अनुकरण करने में लगे है। स्त्री–पुरुष आज भारतीय संस्कृति की पुरातन रुढियों का खण्डन करता हुआ नजर आ रहा है। भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर का रुप नारी को लक्ष्मी–पार्वती की जिन संज्ञाओं से विभूषित किया जाता था आज के जनसंचार के युग में ये सभी मान्यताऐं थोथी सिद्ध होती आ रही है यदि संचार प्रौद्योगिकी का ऐसा विकास न हुआ होता तो हमारी मूलभूत परम्पराएँ जड़ जमाये रहती लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के हावी हो जाने से खान पान रहन–सहन, वेष–भूषा दैनिक कार्यकलाप मनोरंजन

जीवन की अन्य गतिविधियों में तीव्र गति से परिवर्तन होता हुआ परिवर्तन देखा जा सकता है।

जन संचार ने एक ओर हमारे दाम्पत्य सम्बन्धों में नवीन तरीके से जीने की कला को विकसित किया है। दूसरी ओर 'स्त्री–पुरुष' के सम्बन्धों में स्वतंत्रता के दायरे को बड़ी तीवृगति से बढ़ाया है जिनका परिणाम बढ़ते बलात्कारों, शारीरिक सम्बन्धों में बढ़ता रुझान, फैशन परस्त जीवन जीने में विश्वास, स्त्री स्वतंत्रता, पति के प्रति बढ़ता अविश्वास के साथ पुरुष का स्त्री के प्रति बढती शंका के बीजो को बोने का कार्य जनसंचार के साधनों को कहा जाए तो किसी प्रकार की अतिशयोक्ति न होगी।

आधुनिक जन संचार के साधनों ने इस समाज को जोड़ने में भी अपनी अहम भूमिका को अदा किया है। जिससे दाम्पत्य सम्बन्धों का रुप प्रगाढ़ भी हुआ है एक ओर शिक्षा के स्तर को केवल पुरुषों तक ही सीमित न रखके स्त्रियों में शिक्षा प्रचार एवं प्रसार की क्रान्ति सी आ गयी है। जिससे स्त्रियां अन्य देशों की स्त्रियों के समान विज्ञान, राजनीति, तकनीकी, सामाजिक, धार्मिक कार्यों में पुरुषों से बढ चढ़कर अपना योगदान प्रदान कर रही है। इसे जनसंचार के साधनों ने बढ़ावा दिया है।

स्वरोजगारोन्मुख स्त्री के हो जाने से आज अर्थिक संकट की समस्या का समाधान भी दाम्पत्य सम्बन्धों में हुआ है। जिससे परिवारों का स्तर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है क्योकिं हम आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवारों का अध्ययन कर तो पायेंगे समाज का एक वर्ग ऐसा है जिसमें मूलभूत आवश्यकतओं की पूर्ति न होने के कारण दाम्पत्य सम्बन्ध बिगड़ते नजर आ रहे है। जिसके कारण तनाव युक्त जीवन जीने के लिए लोग विवश होते जा रहे हैं लेकिन संचार प्रौद्योगिकी ने लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने का कार्य करके विविध व्यवसायों में लोगों को रोजगारोन्मुखी बनाने में भी अपनी अह्म भूमिका अदा की है जिससे दाम्पत्य सम्बन्धों में सामंजस्य बना रह सकें। आज महिलाऐं हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी से बढ़कर हस्तक्षेप कर रही हैं। विविध महिला पुरुष कहानीकारों ने हमारे समाज की ऐसी ज्वलन्त समस्याओं को निकालकर समाज में हुए बदलावों का उल्लेख किया है और एक नये समाज के नव निर्माण की कल्पना की है।

संचार माध्यमों ने बड़ी तीवृ गति से भाषाओं को जोड़ने और तोड़ने में अपनी अह्म भूमिका निभाने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ रखी है।

विविध प्राकर के संचार माध्यमों को हम नकारात्मक रुप में भी ग्रहण नहीं कर सकते क्योंकि संचार माध्यमों ने हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार न किया होता तो आज 'हिन्दी–भाषा अपनी पहचान भी न बना पाती और दाम्पत्य सम्बन्धों का आधुनिक रुप निखर पाता यह सब संचार क्रान्ति से ही संभव हुआ है।

हिन्दी–भाषा में निर्मित फिल्मों के योगदान को भी ध्यान में रखकर देखा जाये तो पता चलता है संचार माध्यमों ने हिन्दी फिल्मों का प्रसारण करके अनगिनत विदेशी भाषा–भाषी लोगों को हिन्दी की ओर जोड़ने का कार्य किया है। आज संचार माध्यमों के बल से ही हम अपनी भाषा के साहित्य का प्रचार–प्रसार कर रहें हैं। यह सब इन्टरनेट से ही संभव हुआ है। संचार के माध्यम से ही पति–पत्नी के रिश्तो को प्रचारित करके भारतीय संस्कृति को बचायें रखने के लिए क्रान्ति का कार्य किया है।

विश्व के कई राष्ट्रों ने 'हिन्दी भाषा' सीखने के लिए अपने–अपने विश्व विद्यालयों में 'हिन्दी विभागों' का निर्माण करके उपयुक्त संचार के माध्यम से 'हिन्दी भाषा' को सीखने का पुरजोर प्रयास कर रहे है और विदेशों में भारतीय संस्कृति विशेषकर पति–पत्नी के रिश्तों की जीवन शैली को समझा जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति के दाम्पत्य सम्बन्धों को भारतीय संस्कृति से परिचित किया जा रहा है।

विविध प्रयोजनों को पूर्ण करने के लिए प्रयोजनमूलक 'हिन्दी की आवश्यकता के अनुसार भाषा शब्दों के निर्माण को प्रचारित–प्रसारित करने के लिए संचार माध्यमों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता आज सूचना क्रान्ति के युग में हम किसी स्थान पर बैठकर सभी प्रकार के साहित्य से परिचय प्राप्त करके अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। संचार क्रान्ति ने पति–पत्नी रिश्तों में किस प्रकार दरार पड़कर परिवार के परिवार नष्ट हो रहे हैं ऐसे नष्ट होते हुए परिवारों को किस प्रकार सही मार्ग पर चलाया जाए यह सब संचार साधनों के माध्यम से ही संभव हो पाता है।

समाचार पत्र, रेडियो के माध्यम से अपने भाव विचारों को प्रकट करके भाषा के महत्व को प्रकट कर सकते है। इन सभी संचार माध्यमों के लिए आज 'प्रयोजन मूलक हिन्दी' की आवश्यकता है। विविध 'प्रयोजनो' की सिद्धी के लिए 'भाषा' शब्दों के निर्माण की आवश्यकता होती है। अतः संचार माध्यम ऐसी प्रयोजन मूलक भाषी शब्दों को प्रसारित करके भाषा क्षेत्र बढ़ाने में अपनी अह्म भूमिका निभाते है। इनकी अहम् भूमिका निभाने से ही हिन्दी कहानियों नये–नये बदलाव आम जन में देखने एवं सुनने को मिल रखा है।

आज संचार में 'हिन्दी भाषा' प्रचार प्रसार के लिए विज्ञान, चिकित्सा, तकनीकी, खगोल शास्त्र के उच्च स्तरीय ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयोजन परक हिन्दी के निर्माण की आवश्यकता है। साथ ही ऐसी प्रयोजन मूलक हिन्दी को विविध संचार माध्यमों के द्वारा अन्तरर्राष्ट्रीय बाजार के साथ–साथ स्वदेशी भाषा में जोड़ने पर जोर देना होगा साथ ही विदेशी भाषा रुपी खरपतवारों पर समूल नष्ट करने वाली कीटनाशक औषधि का प्रयोग करके परिस्कृत एवं स्वस्थ प्रयोजन मूलक हिन्दी की वृद्धि के लिए विज्ञापन की नवीन–नवीन पद्धतियों को काम में लेकर 'हिन्दी भाषा' के प्रयोजन सिद्धी के कार्य को सम्पन्न करके 'हिन्दी–हिन्दुस्तान' के गौरव की प्राप्ति की जा सकती है और समाज में दाम्पत्य सम्बन्धों में आए विदेशी संस्कृति के हानिकारक परिवर्तन को उपरोक्त क्षेत्रों में कार्यरत स्त्री–पुरूष की मानसिकता को भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रेरित करना होगा साथ ही महिला शिक्षा को बढ़ावा देकर संचार के माध्यम से विविध अछूते क्षेत्रों से नारी समाज को प्रेरित करना होगा जिससे वे स्वरोजगार के प्रति उन्मुख हो सके और आपके अहम् मूल्यों को पहचान कर आदर्श समाज का निर्माण करने में अपना

योगदान दे सकें हिन्दी में दाम्पत्य सम्बन्धों के लेखन को दूर देशों में फैलाकर नारी अस्मिता का संचार माध्यम से प्रसार किया जाए

क्षेत्रीय बोलियों का एक प्रयोजन मूलक हिन्दी रुप यदि बना दिया जाए तो ऐसा प्रयोजन मूलक रुप भारतीय अस्मिता एवं एकता की सिद्धी होने में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता आज 'भाषा' के बल पर ही किसी राष्ट्र की शक्ति का अहसास किया जा सकता है कि वास्तविक विश्व के देशों में हमारी बौद्धिक एवं शारीरिक शक्ति का रुप कितना प्रखर है। स्वातन्त्र्योत्तर कहानी साहित्य का जब हम अध्ययन करते हैं तो पाते है दाम्पत्य सम्बन्धों में क्षेत्रीयता के प्रभाव से भी विविध प्रकार के रुप देखने को मिलते हैं जिनसे एक दूसरे तक भाषा बोली, संस्कृति का आदान प्रदान होता है लेकिन कभी कभी क्षेत्रीयता, बोली आदि का संयोजन न हो पाने के कारण दाम्पत्य सम्बन्ध विघटित हो जाते है। जिससे समाज का बहुत बड़ी क्षति होती है। ऐसी स्थिति में संचार माध्यम विविध सीरियल्स के माध्यम से हमें अभिप्रेरित करते है कि भाषा बोली परिवेश में भी सामंजस्य बिठाया जाए तो दाम्पत्य सम्बन्धों को मजबूती प्रदान की जी सकती है।

प्रशानिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के प्रयोजन मूलक रुप पर ध्यान देकर संचार माध्यमों से प्रचार–प्रसार करते हुए हिन्दी भाषा के वर्चस्व को बनाये रखने के लिए अहम भूमिका अदा करनी होगी। जिससे हिन्दी के गौरव को बनाया रखा जा सके इसके लिए प्रशासन के उच्च पदाशीन, शिक्षक वर्ग, राजनैतिक पदों पर आसीन व्यक्ति, पत्रकार, भावी छात्र–छात्राओं को प्रयोजन मूलक हिन्दी में ज्ञान वूद्धि करके एक भारत के नव–निर्माण में योगदान देकर के ही हमारी संस्कृति अस्मिता को बचाया जा सकता है क्योकि आधुनिक समय प्रौद्योगिकी का समय है। समय की मॉग के अनुरुप हिन्दी का प्रयोजन परक रुपी दर्पण का संचार के विविध साधनों से विश्व के समक्ष लाकर भारतीय लोगों में चेतना परिवर्तित करके ही एक पुरातन 'हिन्दी हिन्दुस्तान' के नारे को बुलन्द किया जा सकता है और दाम्पत्य सम्बन्धों के पहलुओं को संगठित करके नये समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह तभी संभव होगा जब संचार क्रान्ति को प्रयोजन के रुप में उपयोग किया जा सके।

नये दौर की आवश्यकता को समझकर हमें तकनीकि संचार साधनों में नये–नये सॉफटवेयरों का आविष्कार करके हिन्दी भाषा के देवनागरी लिपि के सम्पूर्ण फ्रन्टो का निर्माण करके समस्याओं का समाधान करने की आवश्यकता है। जिससे हम विना व्यवधान के अपने कार्यो को गति देकर नये–नये प्रयोजनों की सिद्धी कर सके। इन्ही संचार माध्यम एवं हिन्दी भाषा के प्रयोजन मूलक हिन्दी आज के सन्दर्भ स्वातत्र्योत्तर दाम्पत्य सम्बन्धों में हो रहे परिवर्तनों को आज नया रुप देने में संचार माध्यम एवं प्रयोजन मूलक रुपों को भुलाया नहीं जा सकता। पति–पत्नी की रुप रेखा में हो रहे बदलावों का मूलभूत कारण संचार क्रान्ति को कहा जाए तो किसी प्रकार का संशय न होगा संचार व्यवस्था को खण्डन और मण्डन के रुप में परिभाषित करना ही सही जान पड़ता है।

संचार क्रान्ति और दाम्पत्य सम्बन्धों किसी न किसी प्रकार से एक दूसरे कटिबद्ध है जैसा कि 21वीं सदी संक्रमण के दौर से गुजर रही है। तकनीकी सम्बद्धता और संचार माध्यमों की उपलब्धता ने सामाजिक आर्थिक व भाषाई असमानताओं की खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैज्ञानिक प्रकृति की इस असाधारण सदी में जब मानव धरती से इतर कही सुदूर ग्रहों पर अपना आशियाना बनाने की फिराक में है तब अपने साहित्य भी अपने बहुआयामी स्वरुप में विस्तार एवं प्रत्येक उन मुद्दों की समीक्षा साक्ष्य का प्रस्तुत कर रहा है। वर्तमान समय साहित्यिक दृष्टि से विमर्शो की सदी कही जा सकती है। दलित विमर्श आदिवासी विमर्श, जैण्डर विमर्श, स्त्री विमर्श आदि बहु प्रकाशित बहुश्रुत चर्चित है। स्त्री विमर्श का मुद्दा साहित्य जगत में अत्यन्त समीचीन और असाधारण रुप में विस्तार पा चुका है। इसमें अपनी अहम् भूमिका संचार ने की है। संचार माध्यमों की तीवृ प्रगति ने विचारों के आदान–प्रदान को सुलभ बना दिया है। आप जाति–पाँति, ऊँच –नीच, स्त्री–पुरुष, समय–समाज आदि सभी विमर्श के दायरे में है।

संचार माध्यमों ने साहित्यिक विधाओं का प्रचार–प्रसार करके दाम्पत्य सम्बन्धों में हो रहे बदलावों को खूब प्रसारित किया है। नये समाज के नव निर्मण में इनके योगदान को कम आंकना सटीक–सा नहीं लगता अतः संचार और साहित्य एक–दूसरे की कड़ी है तो दाम्पत्य सम्बन्धों के नियोजित संचालन को समाज की धुरी कहा जाए तो किसी प्रकार का संदेह नहीं यह सब संचार माध्यमों से सम्भव हो सका है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. दाम्पत्य सम्बन्धो में संचार साधनों की भूमिका को प्रकट करना।
2. आधुनिक परिवेश में संचार क्रान्ति और दाम्पत्य सम्बन्धों के बदलते रुप को प्रकट करना।
3. स्वतंत्र्योत्तर दाम्पत्य सम्बन्धी कहानियों का संचार के माध्यम से प्रचार–प्रसार करना।
4. नारी अस्मिता को संचार माध्यमों से प्रसारित करना।
5. संचार व्यवस्था के माध्यम से स्त्री–पुरुष के आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों के परिवर्तन को स्पष्ट करना।

निष्कर्ष

संचार की बडती गति ने समाज की रुपरेखा को परिवर्तित कर दिया है। वास्तविक रुप से संचार माध्यम दाम्पत्य सम्बन्धों की एक कड़ी है। शिक्षा के मूल पहलुओं पर आज ध्यान देकर नई संचार क्रान्ति की आवश्यकता आ पड़ी है क्योंकि स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर ही एक सुदृढ़ समाज की नीव खड़ी है। नारी अत्याचारों का शोधन संचार माध्यम कर भी सकते है तो अत्याचारो के रुप को बड़ा भी सकते है। इस विषय बिन्दु पर आज विचार करने की आवश्यकता है। स्त्री–पुरुष संबंधो को सही दृष्टिकोण से समझने का रास्ता हिन्दी कहानी को कहना ही उचित जान पड़ता है। इस सही रास्ते से परिचित कराने का कार्य संचार क्रान्ति पर निर्भर करता है। स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारो की दाम्पत्य संबंधी कहानियों का प्रचार–प्रसार करने में संचार की भूमिका अहम् है। संचार माध्यम से ही

भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का परिवर्तित रुप दाम्पत्य संबंधो में देखने को मिलता है। संचार माध्यमों के संपर्क में आने पर आज दाम्पत्य जीवन की जीने की शैली महंगे होटलों में भोजन करना, अंर्ग्रेजी फिल्म देखना महंगे वस्त्र खरीदना आधुनिकता के पर्याय बन गये है। संचार क्रान्ति के कारण ही स्त्री–पुरुष दोनों का धन कमाना, प्रदर्शन करना, मौज–मस्ती करके जीवन–यापन करना ही लक्ष्य बन गया है। आधुनिक संचार व्यवस्था ने स्त्री–पुरुष की जीवन–पद्धति में ईर्ष्या व स्वार्थ–भावना को बढ़ावा दिया है। दाम्पत्य संबंधी आज परिश्रम, धीरज, सन्तोष जैसी आदतों से किनारा कर रहें है। साथ ही पति–पत्नी में मानवीय संवेदना मिलकर बात–चीत करने का अभाव, अन्य कार्यो में व्यस्त रहना जैसे बदलाव संचार क्रान्ति ने ही किये है। महानगरो के प्रति लगाव आधुनिक सभ्यता की पहचान बनाने का कार्य संचार माध्यमों की ही देन कहा जा सकता है।

आज उक्त पहलुओं को ध्यान में रखकर संचार क्रान्ति के पक्ष एवं विपक्षों को देखने की आवश्यकता है। जिससे दाम्पत्य संबंधी समाज को गर्त में जाने से बचाया जा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रयोजनपरक हिन्दी, डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ पृष्ठ–29
प्रयोजनपरक हिन्दी, डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ पृष्ठ– 31
प्रयोजनपरक हिन्दी, डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ पृष्ठ– 49
प्रयोजनपरक हिन्दी, डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ पृष्ठ– 60
साहित्य दर्पण 3,129,130
हंस, मई 1989, संपादक राजेन्द्र यादव, अछर प्रकाशन
स्त्री आंकाक्षां के मानचित्र, नीता श्री, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ –60
स्त्री अध्ययन की बुनियाद, प्रमीला के. पी., राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2015 पृष्ठ–कवरपेज
स्त्री अस्मिताः शय्या से सर्वोच अदालत तक, सीमा दीक्षीत सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011 पृष्ठ–135
स्त्री वादी विमर्शः समाज और साहित्यक, राजकमल प्रकाशन, नर्द दिल्ली पृष्ठ–98
उत्तर आधुनिकता साहित्य विमर्श, सुधीश पचौरी पृष्ठ–121
स्त्री विमर्शः विविध पहलु संपादक, कल्पना वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2011, पृष्ठ–221
स्मकालीन कविता में स्त्री विमर्श पृष्ठ संख्या 04,05
डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, मध्य युगीन काव्य, साधना पृष्ठ–68